Himalayan Journal of Social Sciences & Humanities
(A Peer Reviewed Journal of Society for Himalayan Action Research and Development)
ISSN: 0975-9891

पंचमहायज्ञ–विवेचन

चन्द्रशेखर भट्टः
संस्कृत विभाग एच0एन0बी0, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिड़ला परिसर

Manuscript Info

Manuscript History

Received: 21.11.2016
Revised: 13.12.2016
Accepted: 27.12.2016

कुंजी शब्द–,

पंचमहायज्ञ, विवेचन

सारांश

शोध संक्षेप – वैदिक संस्कृति इस धरा पर सभी संस्कृतियों में प्राचीनतम है। इस संस्कृति का प्रादुर्भाव सृष्टि के साथ ही हुआ। वैदिक संस्कृति का प्रमुख उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है जो सोलह संस्कारों के बाद **''पंच महायज्ञ''** से प्राप्त किये जाते हैं वैदिक संस्कृति के अर्न्तगत पंच महायज्ञ साधना सर्वश्रेष्ठ साधना है। जिसके माध्यम से मानव सहजता के साथ धर्म, अर्थ, काम मोक्ष का सेवन करता है।

पंचमहायज्ञों का वैदिक यज्ञपरम्परा में महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसे प्रत्येक गृहस्थ के लिए अनिवार्य बताया गया हैं, मनुस्मृति के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन विधिपूर्वक पंचमहायज्ञ का सम्पादन करना चाहिए–

गृहस्थ पुरूषों को विवाह से निष्पादित अग्नि में गृह्यसूत्रोक्त कर्मों को गृह्यसूत्रों के विधान के अनुसार सम्पन्न करना चाहिए, पंचमहायज्ञ के विधान को और प्रतिदिन भोजन के लिए किए जाने वाले पाचनकार्य को भी विवाह से निष्पादित अग्नि में ही सम्पन्न करना चाहिए।

वैवाहिकेऽग्नौ कुर्वीत गृह्यं कर्म यथाविधि।
पंचयज्ञविधानं च पंक्ति चाऽन्वाहिकीं गृही।[1]

गृहस्थ के घर में पाँच स्थल ऐसे हैं, जहाँ प्रतिदिन न चाहने पर भी जीव हिंसा होने की सम्भावना रहती है।

गृहस्थ जिनको उपयोग में लाता हुआ पाप से सम्बद्ध हो जाता है, चुल्ही, चक्की (जाँता), झाड़ू, ओखली–मुसल और जल का घड़ा ये पाँच गृहस्थ की सूना (जन्तुवधस्थान) हैं ये पंचसूना प्राचीन हैं, वर्तमान में रहन–सहन में परिवर्तन तो आया है, लेकिन किसी न किसी तरह जीव हिंसा तो होती है।

पंचसूना गृहस्थस्च चुल्ली पेषण्युपस्करः।
कण्डनी चोदकुम्भश्च बाध्यते यस्तु वाहयन्।।[2]

क्रमशः इन सब पाँच सूनाओं के प्रायश्चित्त के लिए महर्षियों से गृहस्थों के लिए प्रतिदिन पाँच महायज्ञ कर्तव्य रूप में विहित किए गए हैं।

© SHARAD

तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पंचक्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्।। [3]

वेद का अध्ययन और अध्यापन ब्रह्मयज्ञ है, पितरों का जल से अथवा अन्न से तर्पण पितृयज्ञ है, होम देवयज्ञ है, बलिहरण भूतयज्ञ है, अतिथि का सत्कार मनुष्य यज्ञ है।

जो गृहस्थ अपनी शक्ति के अनुसार इन पाँच यज्ञों को नहीं छोड़ता है, वह गृहस्थाश्रम में रहता हुआ भी गृहस्थाश्रम में नित्य उत्पन्न होने वाले सूना–दोषों से लिप्त नहीं होता है।

अध्ययनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।
पंचैतान् यो महायज्ञान् न ह्यापयति शक्तितः।
स गृहेऽपि वसन् नित्यं सूनादोषैर्न लिप्यते।। [4]

जो गृहस्थ देवताओं को, अतिथि को, वृद्ध माता–पिता, बालक पुत्र, साध्वी पत्नी इत्यादि पोष्यवर्ग को पितरों को और अपने को अन्न नहीं देता है वह श्वास लेता हुआ भी नहीं जीता है।

पाँच महायज्ञों को क्रमशः अहुत, हुत, प्रहुत, ब्राह्म्य हुत और प्राशित इन नामों से भी जाना जाता है। अहुत जप (वेदाध्ययन वा ब्रह्मयज्ञ) है, हुत होम देवयज्ञ है, प्रहुत भूतबलि भूतयज्ञ है, ब्राह्म्य हुत मनुष्ययज्ञ है तथा प्राशित पितृयज्ञ है। ऐसा मनु भी कहते हैं–

अहुतं च हुतं चैव वथ प्रहुतमेव च।
ब्राह्म्यं हुतं प्राशितं च पंचयज्ञान् प्रचक्षेते।।
जपोऽहुतो हुतो होमः प्रहुतो भौतिको बलि।
ब्राह्म्यं हुतं द्विजाऽग्न्याऽर्चा प्राशितं पितृतर्पणम्।।[5]

1– ब्रह्मयज्ञ –

सन्ध्यावन्दन के बाद द्विजमात्र को प्रतिदिन वेदपुराणादि का पठन–पाठन करना चाहिए। गृहस्थ (ब्राह्मण) स्वशाखावेद के अध्ययन में (ब्रह्मयज्ञ में) नित्य ही संलग्न रहे। इस लोक में दैव कर्म में (होम में) भी सदा संलग्न रहे, क्योंकि दैवकर्म में संलग्न जन ही इस स्थावर जगत् को पोषित करता है।

स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्याद् दैव चैवेह कर्मणि।
दैवकर्मणि युक्तो हि विभर्तीदं चराचरम्।।[6]

ब्रह्मयज्ञ के लिए मन्त्रपाठ–

देश काल के स्मरणपूर्वक 'अथ ब्रह्मयज्ञाख्यं कर्म करिष्ये–ऐसा उच्चारण कर संकल्प करे।

ऋग्वेद– अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

यजुर्वेद– इषे त्वोर्जेत्वावायवस्थ देवो वःसविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मध्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अभक्ष्मा माव स्तेन ईशत माघशूँ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।

सामवेद– अग्न आयाहि वीयते गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सु बर्हिषि।

अथर्ववेद– शं नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं –योरभिस्रवन्तु नः।

समयाभाव होने पर केवल गायत्री महामन्त्र जपने से भी ब्रह्मयज्ञ की पूर्ति हो जाती है।

अवेदविन्महायज्ञान् कर्तुमिच्छंस्तु यो द्विजः।
तारव्याहृतिसंयुक्तां सावित्रीं त्रिः समुच्चरेत्।।[7]

© SHARAD

2–पितृयज्ञ–

तर्पण का फल

एक–एक पितर के निमित्त तिलमिश्रित जल की तीन–तीन अंजलियाँ प्रदान करना चाहिए। (इस प्रकार तर्पण करने से) जन्म से आरम्भ कर तर्पण के दिन तक किये पाप उसी समय नष्ट हो जाते हैं।

तर्पण न करने से प्रत्यवाय

ब्रह्मादिवेद एवं पितृगण तर्पण न करने वाले मानव के शरीर का रक्तपान करते हैं। अर्थात् तर्पण न करने के पाप से शरीर का रक्तशोषण होता है।

''अतर्पिताः शरीराद्रुधिरं पिबन्ति''

इससे यह सिद्ध होता है कि गृहस्थ मानव को प्रतिदिन तर्पण अवश्य करना चाहिये, क्योंकि ऋषि, पितर, देवता, भूत और अतिथि भी गृहस्थों से ऋषिनिधि रक्षा की और, अन्नजलादि की आशा करते हैं, इसलिए इस वस्तुस्थिति को और शास्त्रविधान को जानने वाले गृहस्थ को ऋषि, पितर इत्यादि की तृप्ति हेतु पितृयज्ञ करना चाहिये।

ऋषयः पितरो देवा भूतान्यतिथयस् तथा।
आशासते कुटुम्बिभ्यस् तेभ्यः कार्यं विजानता।।[8]

पितरों की प्रीति सम्पन्न करता हुआ गृहस्थ अपनी शक्ति के अनुसार अन्नों के भोज्य पदार्थों से अथवा जल से अथवा दूध से अथवा मूल से अथवा फल से भी प्रतिदिन श्राद्ध करना चाहिए।

तर्पण योग्य पात्र

सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा का पात्र पितरों के तर्पण में प्रशस्त माना गया है। मिट्टी तथा लोहे का पात्र सर्वथा वर्जित है।

हैमं रौप्यमयं पात्रं ताम्रं कांस्यसमुद्भवम्।
पितृणां तर्पणे पात्रं मृण्मयं तु परित्यजेत्।।[10]

तिल तर्पण का निषेध

सप्तमी एवं रविवार को, घर में, जन्मदिन में, दास, पुत्र और स्त्री की कामनावाला मनुष्य तिल से तर्पण न करें। नन्दा (प्रतिपादा, षष्ठी, एकादशी) तिथि, शुक्रवार, कृतिका, मघा एवं भरणी नक्षत्र, रविवार तथा गजच्छायायोग में तिल से कदापि तर्पण न करे।

सप्तम्यां भानुवारे च गृहे जन्मदिने तथा।
भृत्यपुत्र कलत्रार्थी न कुर्यात् तिलर्पणम्।।
नन्दायां भार्गवदिने कृतिकासु मघासु च।
भरण्यां भानुवारे च गजच्छायाह्वये तथा।।
तर्पणं नैव कुर्वीत तिलमिश्रं कदाचन।।[11]

घर में ग्रहण, पितृश्राद्ध, व्यतीपातयोग, अमावस्या तथा संक्रान्ति के दिन निषेध होने पर भी तिल से तर्पण करें। किन्तु अन्य दिनों में घर में तिल से तर्पण न करें।

कुशा के अग्रभाग से देवताओं का मध्य से मनुष्यों का और मूल तथा अग्रभाग से पितरों का तर्पण करना चाहिए।

प्रागग्रेषु सुरांस्तृप्येन्मनुष्यं चैव मध्यतः।
पितृंश्च दक्षिणाग्रेषु दद्यादिति जलांजलीम्।।[12]

© SHARAD

पूर्वाभिमुख होकर देवतीर्थ से देवताओं को तीन बार, ऋषियों को तीन बार एवं प्रजापति को एक बार जल देकर दक्षिणाभिमुख होकर पितृतीर्थ से कुश–तिल जल लेकर पिता, पितामह, प्रतितामह, मातामह, प्रमातामह एवं वृद्ध प्रमातामहों को तीन–तीन बार जल दें। यही षट्पुरूषतर्पण कहलाता है, जो नित्य कर्म में आता है। पंचमहायज्ञ के पितृकर्म में अधिक ब्राह्मणों को भोजन कराना सम्भव न होने पर एक ही ब्राह्ममण को भोजन कराना चाहिए। ऐसा मनुस्मृति से विदित होता है –

एकमप्याशयेद् विप्रं पित्रर्थे पांचयज्ञिके।
न चैवाऽत्राऽऽशयेत् कंचिद् वैश्वदेवं प्रति द्विजम्।।[13]

3–देवयज्ञ–

पूजामण्डप में आकर पूर्वाभिमुख वा उत्तराभिमुख होकर आचमन करके, पवित्र वस्त्रों को धारण कर, मौन होकर ध्यानपूर्वक काम–क्रोध, मद–मात्सर्य तथा शीघ्रता से रहित होकर स्वस्थ मन से दक्षिण भाग में पुष्पपात्र, वाम भाग में जलपात्र तथा पूजोपकरण यथा स्थान रखकर जलपूर्ण अर्घ्यपात्र आगे रखकर उस जल से उस स्थान को एवं पूजा द्रव्यों को और अपने आपको शुद्ध करके किसी पात्र में देवताओं की पूजा करनी चाहिए।

प्रतिदिन पंचदेव (सूर्य, गणपति, विष्णु, दुर्गा एवं शिव) का पूजन अवश्य करना चाहिए। यदि वेद मन्त्रों के अभ्यस्त न हों तो आगमोक्त मन्त्र से, यदि उनके भी अभ्यस्त न हों तो नाम मन्त्र से और यदि यह भी सम्भव न हो तो बिना मन्त्र के ही जल, चन्दन आदि चढ़ाकर पूजा करनी चाहिये।

अयं विनैव मन्त्रेण पुण्यराशिः प्रकीर्तितः।
स्यादयं मन्त्रयुक्तश्चेत् पुण्यं शतगणोत्तरम्।।[14]

मानस पूजा–

वस्तुतः भगवान् को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं , वे तो भाव के भूखे हैं। संसार में ऐसे दिव्य पदार्थ उपलब्ध नहीं हैं, जिनसे परमेश्वर की पूजा की जा सके =, इसलिए पुराणों में मानसपूजा का विशेष महत्त्व है, मानसपूजा में भक्त अपने इष्टदेव को मुक्तामणियों से मण्डितकर स्वर्णसिंहासन पर विराजमान करता है, स्वर्गलोक की मन्दाकिनी गंगा के जल से अपने आराध्य को स्नान कराता है, कामधेनु गौ के दुग्ध से पंचामृत का निर्माण करता है। वस्त्राभूषण भी दिव्य अलौकिक होते हैं। पृथ्वीरूपी गन्ध का अनुसेवन करता है। अपने आराध्य के लिए कुबेर की पुष्पवाटिका से स्वर्णकमलपुष्पों का चयन करता है। भावना से वायुरूपी धूप, अग्निरूपी दीपक तथा अमृतरूपी नैवेद्य भगवान् को अर्पण करने की विधि है। साथ ही त्रिलोक की सम्पूर्ण वस्तुएँ सभी उपचार सच्चिदानन्दघन परमात्मप्रभु के चरणों में भावना से भक्त अर्पण करता है।

मानसपूजा से चित्त एकाग्र और सरस हो जाता है, इससे बाह्यपूजा में भी रस मिलने लगता है।

देवों के लिए किया गया पूजन, हवन ही ''देवयज्ञ'' है। इस देवकर्म को करता हुआ द्विज इस चराचर जगत् को धारण करता है। विधिपूर्वक अग्नि में दी हुई आहुति सूर्य को प्राप्त होती है। सूर्य से ''वृष्टि'' तथा वृष्टि से अन्न एवं अन्न से प्रजाएँ उत्पन्न होती हैं और जीवन धारण करती हैं।

4–भूतयज्ञ–

विभिन्न प्राणियों की संतुष्टि के लिए किया जाने वाला यज्ञ ही '' भूतयज्ञ'' कहलाता है, इसे 'बलिवैश्वदेव' भी कहा जाता है। प्रतिदिन गार्हस्थ्य अग्नि में पकाए गए वैश्वदेव के लिए अन्न का विधिपूर्वक हवन करना चाहिए। प्रथमतः अग्नि के उद्देश्य से, तत्पश्चात् सोम के उद्देश्य से पुनः सम्मिलित रूप से अग्नि और सोम के उद्देश्य से, फिर धन्वन्तरि के उद्देश्य से, फिर प्रजापति आदि के उद्देश्य से हवन करना चाहिए। इस तरह समुचित रूप से हवन के पश्चात् इन्द्र, यम, वरूण, सोम आदि का पूर्वादि दिशाओं में प्रदक्षिणाक्रम से बलि अर्पित करना चाहिए। इस तरह का कृत्य करने वाला पुरूष प्रकाशमय सर्वोत्तम स्थान को प्राप्त करता है।

© SHARAD

भोजन के लिए जो हविष्यान्न घर में पकाया जाता है, इसी से वैश्वदेव कर्म करना चाहिये। अभाव में साग, पत्ता, फल, फूल, मूल से भी करें–

शाकं वा यदि वा पत्रं मूलं वा यदि वा फलम्।
संकल्पयेद् यदाहारं तेनैव जुहुयाद्धविः।[15]

गेहूँ चावल (जो उसना न हो) तिल, मूँग, जौ, मटर, कँगुनी, नीवार ये हविष्यान्न हैं।

गोधूमा ब्रीहभश्चैव तिला मुद्ग्रा यवास्तथा।
हविष्या इति विज्ञेयावैश्वदेवादि कर्मणि।। [16]

विश्वेदेवों के लिए, दिवाचर (दिन में विचरण करने वाले) प्राणियों के लिए और नक्तंचर (रात्रि में विचरण करने वाले) प्राणियों के लिए भी आकाश की ओर वैश्वदेवान्न को फेंकना चाहिए।

विश्वेभ्यश् चैव देवेभ्यो बलिमाकाशमुत्क्षिपेत्।
दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नक्तंचारिभ्य एव च ।।[17]

लाभ–

जो गृहस्थ ब्राह्मण इस प्रकार प्रतिदिन सभी प्राणियों का सत्कार करता है, वह सीधे मार्ग से तेजः स्वरूप परम स्थान में (ब्रह्म लोक) में जाता है–

एवं यः सर्वभूतानि ब्राह्मणोनित्यमर्चति।
स गच्छति परं स्थानं तेजोमूर्ति पथर्जुना।। [18]

हानि–

सन्ध्या न करने से जैसे प्रत्यवाय (पाप) लगता है, वैसे ही बलिवैश्वदेव न करने से भी प्रत्यवाय लगता है।

पंचयज्ञांस्तु यो मोहान्न करोति गृहाश्रमि।
तस्य नायं न च परो लोको भवति धर्मतः।।[17]

5–अतिथि (मनुष्य) यज्ञ–

बलिवैश्वदेव के बाद सबसे पहले अतिथियों को ससम्मान भोजन कराना चाहिये।

अतिथिमेवाग्रे भोजयेत्।

वैश्वदेवादूर्ध्वं हन्तारान्नव्यतिरित्तमन्नम् अतिथिभ्यो वरेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यद् दीयते स मनुष्ययज्ञस्तावतैव समाप्यते।[20]

अतिथियों को लौटाना नहीं चाहिए, ऐसा करने से पाप लगता है। मध्याह्न में आये अतिथि की अपेक्षा सूर्यास्त के समय आये अतिथि का आठ गुणा अधिक महत्त्व है–

दिनेऽतिथौ तु विमुखे शते यत् पातकं भवेत्।
तदेवाष्टगुणं प्रोक्तं सूर्योढे विमुखे गते।। [21]

सूर्यास्त के समय आये अतिथि को 'सूर्योढ' कहा जाता है। 'सूर्योढ' अतिथि यदि असमय में भी आ जाय तो उसे बिना भोजन कराये नहीं रहना चाहिए।

इसका तात्पर्य ब्राह्मणों अतिथियों तथा भिक्षुओं का भोजन आदि के द्वारा सत्कार करने से है। अतः घर पर आये हुये अतिथि को आसन, पैर धोने के लिए जल तथा भोजन के लिए स्वादिष्ट अन्न से संतुष्ट करना चाहिए। अतिथि का सत्कार न करने वाला व्यक्ति समस्त पुण्यों को खो बैठता है।

© SHARAD

सन्दर्भ–सूची–

1–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 67
2–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 68
3–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 69
4–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 70–71
5–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 73–74
6–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 74
7–नित्यकर्मपूजाप्रकाश–84
8–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 80
9–मनुस्मृति, अध्याय –3 / 82
10–आह्निकसूत्रावली, पितामह उक्त
11– आह्निकसूत्रावली, मरीचि उक्त
12– आह्निकसूत्रावली, मरीच उक्त
13–मनुस्मृति, अध्याय 3 / 83
14– (592) नि0कर्म0पू0प्र0 113
15–देवी भगवत (11 / 22 / 12)
16–आचारेन्दु 252
17– मनुस्मृति, अध्याय 3 / 90,
18– मनुस्मृति, अध्याय 3 / 93
19–देवी भगवत, 11 / 22,
20–धर्म प्रश्न की उक्ति
21– नित्यकर्मपूजाप्रकाश– 155

******

© SHARAD